SJIF 2014 = 3.189
ISSN: 2348-3083
An International Peer Reviewed & Referred
SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL FOR HUMANITY SCIENCE & ENGLISH LANGUAGE

बी0एड् शैक्षिक संस्था प्रबन्धन

कैलाशनाथ गुप्ता, Ph. D.

एसो0.प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष बी0एड्0,एस0जी0पी0जी0कालेज, मालटारी, आज़मगढ़

Abstract

बी0एड्0 शैक्षिक संस्था प्रबन्धन में परम्परागत प्रमापी कृत उपागम के उपयोग के छात्राध्यापकों की उपलब्धि मापन में ज्ञात होता है कि प्रणाम द्वारा प्राप्त अनुदेशान के छात्रों के लब्धि प्राप्ताकों के मध्य में सार्थक होता है जबकि आत्मविश्वास में भी प्रमाणी कृत विधि वाले छात्रों का आत्मविश्वास परम्परागत छात्रों की अपेक्षा अधिक पाया गया है।

शैक्षिक संस्थाओं के प्रबन्धन में प्रमाणीकृतविधा ज्यादा उपयोगी पायी गयी।

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रमाणीकृत लब्धांक :

प्रस्तावाना –:

वर्तमान समय में ज्ञानात्मक विस्फोट दिन प्रतिदिन हो रहा है इसको जन सामान्य तक उपलब्ध करवाने का माध्यम सूचना एवं संचार प्रौद्यौगिक की है सूचना प्रौद्योगिक वास्तव में सूचना (तथ्य, ज्ञान, आकड़े, समाचार आदि) का तात्पर्य जानकारी प्रौद्योगिकी का तात्पर्य पदार्थ, साधन तकनीकि से है Scriven ने कहा है कि सूचनायें शिक्षा नही होती है नही सूचनाये/जानकारी आवश्यक रूप से ज्ञात होती है परन्तु ज्ञान सूचनाओं पर आश्रित होता है। Bell का मानना है कि ज्ञान वाक्यांशो, तथ्यों अथवा विचारों का एक संरचित सेट है जोकि तार्किक निर्णय अथवा प्रायोगिक परिणाम है यही पर यह अन्य से अलग होता है

शैक्षिक तकनीकी शिक्षा जगत में एक ऐसा सम्प्रव्यय है जो वैयक्तिक विभिन्नता को ध्यान में रखते हुये प्रत्येक छात्र को व्यक्तिगत शिक्षा प्रदान करने में सक्षम है दूसरी तरफ समूह को भी शिक्षा प्रदान करने में उपयोगी हैं।

अधिगम उद्देश्य एवं कार्य वि लेशण को हम शिक्षण की नीव मान सकते है शिक्षक को अधिगमक के व्यवहार में वांह नीय परिवर्तन लाने के लिये नयी–नयी युक्तियों को प्रयोग में लाना पड़ता है प्रबन्धन भी उनमें से एक महत्वपूर्ण घटक है जिसे भाोधकर्ता ने अध्ययन के लिये चुना है।

औचित्य :–

अनुदेशात्मक प्रमाण एक ऐसा नवा चार है कि जो कि प्रभावशाली पाठ्य सामग्री के रूप प्रयुक्त होता है यह स्वअध्ययन सामग्री जो कि स्वंय में अनुदेशन से परिपूर्ण है तथा अधिगम के लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करता है।

प्रमाण में ऐसे क्रिया कलापों को करने के लिये कार्य प्रारूप दिये जाते है जिन को करने से छात्र भौक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त कर लेते है। अनुदेशात्मक प्रमाण के पीछे जो दर्शन है वह प्रायः अनुभावों आन्तरिक गुणों आदतों तथा सीखने के तरीको पर आधारित होता है प्रमाण कई तरह से तैयार किये जाते जो पुस्तक, PPT , आदि रूप में हो सकते है

एनसाइक्लोपीडीया आफ एजूकेशन में गोल्डस्मिथ ने कहा है कि माडयूल के तात्पर्य स्वपरिपूर्ण स्वतन्त्र एवं नियोजित अधिगम श्रृंखलाओ से है जो कि छात्र को पूर्व निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायक होते है। जबकि ऐरेन्डास के अनुसार माड्यूल अधिगम क्रियाओं का एक ऐसा समूह है जो कि छात्रों की उपलब्धि के एक उद्देश्य या उद्देश्यों के समूह को प्राप्त करने में सहायक होता है। प्रस्तुत अध्ययन में शैक्षिक प्रशासन के अर्न्तगत शैक्षिक नियोजन पर प्रमाण विकसित किया गया है। पूर्व में हुये शोधों में से किसी ने शैक्षिक नियोजन एवं संस्थागत नियोजन पर प्रमाण या स्वअधिगम सामग्री का निर्माण पूर्व में नही हुआ है अतः विशय चयन ठीक है।

समस्या कथन :–

''बी0एड्0 शैक्षिक संस्थाओं के प्रबन्धन पर विकसित प्रमाण एवं परम्परागत शिक्षण की उपलब्धि तथा आत्मवि वास आधार पर तुलनात्मक अध्ययन''

उद्देश्य :–

1. प्रमाण द्वारा अनुदेशन प्राप्त एवं परम्परागत विधि द्वारा प्राप्त अनुदेशन (बी0एड्0) के लब्धि प्राप्तांको के माध्यो की तुलना
2. प्रमाण द्वारा अनुदेशन प्राप्त एवं परम्परागत विधि द्वारा अनुदेशन प्राप्त B.e.d छात्रों के आत्मविश्वास फलांको के माध्यम की तुलना

अनुसंधान प्रारूप :–

न्यायदर्श गाँधी पी0जी0 कालेज मालटारी के बी0एड्0 कक्षा के छात्र जनसंख्या के रूप में लिये गये है जोकि UP के तथा Bihar के विभिन्न क्षेत्रों से लाये है जिनकी अर्थिक, सामाजिक, स्थिति भिन्न–2 है इसमें स्त्री पुरूश दोनों है। सभी स्नातक तथा हिन्दी भाशी व हिन्दी लेखन के ज्ञाता है।

उपकरण :–

1– उपलब्धि मापन	–स्वर्निमित
2– आत्मविश्वास मापन	रेखा अग्निहोत्री विश्वसनीयता 0.91
	(20–35 वर्श हेतु)

शोधअभिकल्प –:

प्रयोगात्मक प्रकृति का शोध है इसमें पश्च परीक्षण नियंत्रित समूह अभिकल्प का प्रयोग किया गया है।

प्रदन्त संकलन विधि –:

प्रमाण के निर्माण हेतु सर्व प्रथम निर्धारित प्रक्रिया के आधार पर शैक्षिक संस्थाओं का प्रबन्ध कोर्स 56 की एक यूनिट पर प्रमाण विकसित किया गया प्रयोग हेतु चयनित समूहकोरो भागों में बाँट कर एक स्वअध्ययन तथा दूसरे को परम्परागत विधि द्वारा पढ़ाया गया। उपचार के पश्चात् लब्धि मापन हेतु मापनी का प्रयोग किया गया इसके पश्चात् आत्मविश्वास मापा गया। अध्ययन सम्बन्धी आदत के मापन के लिये सनसनवाल व मुखोदाध्याय की मापनी प्रयोग की गयी। जबकि आत्मविश्वास मापने के लिये रेखा अग्निहोत्री की मापनी प्रयुक्त की गयी।

परिणाम व विवेचना –:

A विकसित प्रमाण व परम्परागत शिक्षण का उपलब्धि के आधार पर तुलानात्मक अध्ययन प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता का प्रथम उद्देश्य ''प्रमाण द्वारा अनुदेशन प्राप्त व परम्परागत विधि द्वारा अनुदेशन प्राप्त B.e.d छात्रों के लब्धि प्राप्ताकों के माध्य की तुलना करना है अतः 'T' परीक्षण किया जायेगा

प्रयोगात्मक समूह व नियंत्रित समूह का उपलब्धि माध्य, मानक विचलन व T मूल्य

समूह	N	माध्य	मानक विचलन	मानक त्रुटि माध्य	T
प्रायोगिक समूह	26	40.42	5.56	1.09	7.24
नियंत्रित समूह	37	29.40	6.19	1.09	

तलिका से ज्ञात होता है कि T संख्या 7.24 सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थक नहीं है आर्थत प्रमाण द्वारा अनुदेशन प्राप्त व परम्परागत अनुदेशन प्राप्त छात्रों के लब्धि प्राप्तांको के माध्य मे सार्थक अन्तर नही होगा को आन्वीकृत किया जाता है। अर्थात प्रयोगात्मक समूह व नियंत्रित समूह के माध्य की उपलब्धि में प्रमाणित अन्तर है अर्थात सार्थक है इसका निम्न कारण हो सकता है –

1. प्रमाण स्वतः में परिपूर्ण होता है।
2. छात्र अपनी क्षमता से सीखते है।
3. प्रमाण में उद्देश्य स्पश्ट होते है।
4. पाठ्य बिन्दु ज्ञान से जुड़ा है।
5. मूल्यांकन की व्याख्या होती है।
6. अन्तः क्रिया व तार्किकता का अवसर है।

यह समस्त विशेशतायें सिर्फ प्रमाण में उपस्थिता रहती है इसी कारण प्रयोगात्मक समूह लाभ में रहा।

आत्मविश्वास का अध्ययन –:

द्वितीय उद्देश्य की पूर्ति करने के लिये रेखा अग्निहोत्री के मापनी का प्रयोग कर निम्न परिणाम प्राप्त किया गया

प्रयोगात्मक समूह व नियंत्रित समूह के आत्मविश्वास के फलांको की सारणी

समूह	N	माध्य	मानक विचलन	मानक त्रुटि माध्य	T
प्रयोगात्मक समूह	26	21.46	832	1.63	1.864
नियंत्रित समूह	30	25.43	7.61	1.39	

तलिका से स्पश्ट है कि T आकड़े 1.864 सार्थकता के स्तर 0.5 स्तर पर सार्थक नहीं है जबकि df = 54 है अपति प्रमाण द्वारा अनुदे ान प्राप्त छात्रों के व परम्परागत अनुदेशन प्राप्त छात्रों के आत्मविश्वास के फलांक के माध्य में सार्थक अन्तर नहीं होगा यही परिणाम दिखता है इसके निम्नकारण हो सकते हैं। आत्मवि वास भावना, विचार, आशा, डर, मेहनत, कल्पना से आता है

परिणाम –:

शैक्षिक संस्थाओं का प्रबन्धन B.e.d पाठ्यक्रम पर विकसित प्रमाण द्वारा अनुदेशन प्राप्त छात्र एवं परम्परागत अनुदेशन प्राप्त छात्र के लब्धि प्राप्तांको के माध्य में सार्थक अन्तर पाया गया अयति प्रमाण परम्परागत विधि की अपेक्षा अधिक प्रभाव ाली है।

शैक्षिक संस्थाओं के प्रबन्धन बी0एड्0 पाठ्यक्रम में प्रमाण द्वारा अनुदेशित व परम्परागत रूप में अनुदेशित छात्रों के आत्मविश्वास के फलांको में सार्थक अन्तर नही होगा अर्थात आत्मविश्वास समान था।

निहितार्थः –:

1. प्रमाण का प्रयोग लाभकारी है। प्रशिक्षण में यह अधिक उपयोगी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

Ames, T.R.H.
A vedio taped Im por the farming of personal working with moderately severely and profoundly retarded adol & adults.
Agnihotri R
Self confidence inventory Agra
Gage NL
Handbook of research on teaching Rand NcN 2003